https://doi.org/10.5281/zenodo.19684947
गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.) द्वारा प्रकाशित

संस्थापक संपादक
स्व. फतेहचंद

SHODH SAMALOCHAN
शोध-समालोचन (त्रैमासिक)

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REREREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL
UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्ष-13, अंक-2 अप्रैल-जून / 2026 (भाग-1) आईएसएसएन : 2348-5639

संरक्षक
• डॉ. इस्पाक अली, बैंगलुरु

संपादक
• डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

कार्यकारी संपादक
• डॉ. वर्षा रानी

प्रबंध संपादक
• डॉ. मुकेश 'ऋषिवर्मा'

सह-संपादक
• डॉ. लता एस. पाटिल,
• डॉ. सुलक्षणा अहलावत

अक्षर संयोजन
• मो. सलीम

कानूनी सलाहाकार
• डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
• अजीत सिहाग, एडवोकेट

अंतरराष्ट्रीय सम्पादक मंडल

• आशीष कुमार, गाजियाबाद
• डॉ. कुमारी लक्ष्मी जोशी, नेपाल
• डॉ. निशीथ गौड, आगरा
• डॉ. राजेश शर्मा, श्रीगंगानगर
• श्री शियोन छन श्यू, चीन
• डॉ. ऋतु शर्मा ननंन पांडे, नीदरलैंड
• डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट, श्रीनगर
• डॉ. दीपशिखा, पटियाला
• डॉ. सुनीता शर्मा, ऑस्ट्रेलिया
• श्री राकेश शंकर भारती, युक्रेन
• डॉ. के.के. मल्होत्रा, कैनेडा
• डॉ. आशीष कुमार दीपांकर, मेरठ
• डॉ. कामिनी कौशल, गाजियाबाद
• डॉ. रवि शंकर सिंह, आरा

1. 'शोध-समालोचन' का प्रबंधन और संपादन पूर्णतः अवैतनिक है।
2. 'शोध-समालोचन' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी है।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्र भिवानी न्यायालय ही मान्य होगा।
4. प्रकाशक/ स्वामी डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से मुद्रित करवाया।

'शोध समालोचन' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है–**बैंक :** PUNJAB NATIONAL BANK **Branch :** Yamuna Vihar, Delhi-110053 **IFSC :** PUNB0225600 **Account Holder :** SANIA PUBLICATION **Current Account No.** 2256002100405546 भुगतान की मूल रसीद, शोध -पत्र पत्रिका की ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

नोट :- इस अंक की प्रिंट कॉपी खरीदने के लिए सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से सम्पर्क करें मो. 9818128487

मूल्य : 650/- रु. एक प्रिंट प्रति वार्षिक 2500/- रु.

गोदान उपन्यास में पशु-पक्षी हिंसा एवं उनके संदर्भ में भारतीय दण्ड संहिता 159
अरविन्द कुमार
सल्तनत काल में महिलाओं की शैक्षिक व्यवस्था और प्रशासनिक स्थिति : वर्तमान समय में प्रासंगिकता 162
डॉ. अनीता रानी
पाणिनीयव्याकरणेर प्रत्याहारविवेचनम् 169
Pinki Sarkar
भारतीय ज्ञान परम्परा के उन्नयन में याज्ञवल्क्य स्मृति की समकालीन प्रासंगिकता 175
डॉ. संदीप ठाकरे
डॉ. भारत भूषण सिंह
बुद्ध शरण हंस के कथा साहित्य में दलित उत्पीड़न और प्रतिरोध की अभिव्यक्ति 181
राकेश कुमार
डॉ. विद्या विंदु सिंह की कहानियाँ : परिवार में नारी की भूमिका 186
जे. अशोक कुमार जैन
डॉ. अनुराधा पाकलपाटि
जंग और साहिर - साहिर लुधियानवी 192
सिद्धार्थ
महाराष्ट्र के आदिवासी क्रांतिकारक राघोजी भांगरे 195
डॉ. नामदेव ज्ञानदेव शितोळे
बुद्ध शरण हंस के कथा साहित्य में ग्रामीण जीवन और जातिगत संरचना 199
राकेश कुमार
साहित्य और भारतीय सिनेमा का अंतरसंबंध : सिनेमा में किसान विमर्श 204
डॉ. अर्चना प्रमोद वैद्य

https://doi.org/10.5281/zenodo.19684947 SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

डॉ. विद्या विंदु सिंह की कहानियाँ : परिवार में नारी की भूमिका

जे. अशोक कुमार जैन
शोधार्थी
UP23P9650002

डॉ. अनुराधा पाकलपाटि
शोध निर्देशिका
वेल्स इंस्टिट्यूट ऑफ़ सॉइंस टेक्नोलॉजी एंड एडवांस स्टडीज

शोध का सार

विश्व में कोई अमूल्य निधि है तो वह है परिवार, यह सामाजिक इकाई है, जिसमें रक्त संबंधी या विवाह संबंधी लोग एक साथ रहते हैं और एक दूसरे का सहयोग करते हैं। परिवार में नारी की भूमिका अति महत्वपूर्ण है। वह कुटुंब की आधारशिला है और वह घर को संभालने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। परिवार के सदस्यों के लिए एक प्रेरणा का स्त्रोत बनती है।

विद्‌या विन्दु सिंह ने अपनी कहानियों के माध्यम से नारी को अलग-अलग दृष्टिकोण से परिवार से संबंधित अनेक पहलुओं को स्पष्ट रूप से उल्लेखित किया है। जैसे आज के टूटते परिवार, असुरक्षित बचपन और असुरक्षित वृद्‌धावस्था का संकट सभी को स्पष्ट रूप से दिखाने का प्रयास किया है। प्रत्येक व्यक्ति अपने -अपने परिजनों के भविष्य को लेकर चिंतित है। इन परिस्थितियों के मद्देनज़र लेखिका ने अपनी कलम चलाई है। तथा अन्य विषय वस्तु को छूते हुए लेखिका ने भारतीय परिवार में नारी का स्वरूप, परिवार के अंतर्गत नारी किस तरह त्याग करती है, एवं अन्य देशों से हमारे देश में नारी किस प्रकार भिन्न है, परिवार में नारी स्वयं के लिए नहीं अपितु दूसरों के लिए किस तरह जीतीं हैं, परिवार में वह किस तरह से सेवा करती है, दूसरों की किस तरह चिंता करती है ये सभी बातें उन्होंने स्पष्ट रूप से बताने की कोशिश की है।

मूल शब्द : परिवार, साहित्य, जीवन, समाज, नई, परिजन, समर्पण, शांति, सुरक्षा, रक्षा, भावना।

भूमिका

भारतीय नारी परिवार के सदस्यों का ख्याल रखती है, उनकी भावनाओं को समझती है। नारी पारिवारिक समस्याओं को हल करने के लिए हमेशा तत्पर रहती है। परिवार के हरेक सदस्य को सुरक्षित एवं प्यार भरे वातावरण में रहने के लिए प्रेरित करती है। परिवार के वित्तीय प्रबंधन में प्रमुख भूमिका निभाती है। वह परिवार के सदस्यों के स्वास्थ्य का ध्यान रखती है। परिवार के साथ-साथ समाज के उत्थान के लिए भी अहम भूमिका निभाती है। साथ ही साथ एक आदर्श स्त्री की भूमिका भी निभाती है। नारी घर को उन्नत बनाने के लिए एवं समाज को अग्रसारित बनाने के लिए हमेशा आगे रहती है।

समाज का अति महत्वपूर्ण हिस्सा है परिवार। परिवार का अभिन्न अंग है नारी। वह हमारे जीवन का सबसे महत्वपूर्ण आधारशिला है। यह केवल रक्त संबंधों का समूह ही नहीं, बल्कि प्रेम, सहयोग, समझ और सुरक्षा का प्रतीक है। परिवार हमें संस्कार, मूल्य और जीवन जीने की दिशा देता है। सुख-दुख के हर क्षण में परिवार हमारा साथ निभाता है और हमें मजबूत

बनाता है। इसलिए, परिवार में नारी की शक्ति हमारे लिए उर्जा का स्रोत है। मानव जीवन का का केंद्र परिवार में नारी ही बनती है अत; परिवार में प्रत्येक व्यक्ति नारी को अधिक महत्व देता है। उस महत्वता के कारण व्यक्ति हर तरह की सफलता को हासिल कर पाता है।

घर परिवार केवल रहने का स्थान नहीं, बल्कि भावनात्मक सुरक्षा, सामाजिककरण और सांस्कृतिक मूल्यों का केंद्र माना जाता है। घर में बच्चे बुजुर्गो से संस्कार सीखते हैं, और हरेक सदस्य एक-दूसरे का सहारा बनते हैं। भारतीय संदर्भ में परिवार कृषि-आधारित अर्थव्यवस्था और परंपराओं से जुड़ा रहा है, यह बच्चों और अन्य रिश्तेदारों का घनिष्ठ समूह होता है, जहाँ सदस्य आपस में रक्त, विवाह या भावनात्मक बंधन से जुड़े रहते हैं। परिवार वह जगह है जो अपनों के सुख-दुख में आपद- विपद में हारी- बीमारी में हर्ष- उल्लास में एक दूसरे के काम आना सिखाता है। एक-दूसरे की उन्नति का मार्ग प्रशस्त करने की सीख और अवसर देता है।

परिवार में नारी की भूमिका

1. एडियही काकी

'एडियही काकी' कहानी में लेखिका ने विमला नामक नारी पात्र के माध्यम से समाज में व्याप्त गहनतम विचारों को सरल एवं सुबोध शैली में बताने का प्रयास किया है। हमारे भारतीय संस्कृति में नारी की भूमिका एवं पुरुष के कर्तव्य, अकर्तव्य पर विश्लेषणात्मक ढंग से प्रस्तुति की है। एक परिवार में नारी कितनी महत्वपूर्ण भूमिका रखती है इसपर विस्तृत जानकारी दी है।

विमला पात्र के माध्यम से पारिवारिक एवं सामाजिक कर्तव्यों का बोध अनूठे दृष्टि से खाया गया है। विमला पात्र एक ही है लेकिन उसकी भूमिका अनेक हैं जैसे पत्नी, बहु, माँ आदि भूमिकाओं को कर्तव्यनिष्ठा से निर्दोषपूर्ण रूप से निभाती है। खेत जोतती है साथ-ही-साथ भारतीय नारी के सर्वोत्कृष्ट गुणों से भी सभी को अवगत कराती है। विमला बहु घर में रहनेवाले लोगों का पूरा ध्यान रखती है, बुजुर्ग लोगों से आदर सम्मान पूर्ण व्यवहार करती है यह दिखाया है, इस कहानी में एक पत्नी पति के प्रति कितना लगाव रखती है अपनी आस्था, श्रद्धा से किस प्रकार नारी का आदर्श रूप प्रकट करती है यह भी समझाया गया है। विमला के माध्यम से नारी की सहनशीलता, संघर्ष, साहस आदि का परिचय 'एडियही काकी' कहानी के माध्यम से हमें पता चलता है।

जैसे एडियही काकी कहानी के माध्यम से परिवार में होनेवाली समस्याओं को उल्लेख करते हुए विमला पात्र की धैर्य और साहस का यत्र तत्र वर्णन मिलता है। विमला का पति राजेंद्र अहमदाबाद में नौकरी करता था वह गांव में ही रहकर बीमार श्व्सुर और बुढी सास की सेवा करती है। खेती का काम करके दो बच्चों को पढ़ने स्कूल भेजती है। लेकिन आजकल के परिवारों में बड़े-बुजुर्ग लोगों का ध्यान नहीं रखा जाता है। विमला के पति राजेंद्र की तबीयत खराब होती है। वह वैद्य के पास चलने को कहती हैं पर राजेन्द्र एड्स जैसी बड़ी बीमारी की बात खूल जाने के डर से नहीं जाता। विमला पति के गिरते स्वास्थ्य से चिंतित होकर वैद्य जी से मिलती है, तब वैद्य घर आकर राजेंद्र को देखते हैं और तुरंत जान जाते हैं कि उसे एड्स हुआ है। कुछ हिदायतें और दवा देकर बहू विमला को सारी बात बताते हैं। विमला पति की खूब सेवा करती है, समय पर अच्छा भोजन, गांव की ताजी हवा और परिवार का स्नेह भरा वातावरण मिलने से वह कुछ ठीक हो जाता है। राजेंद्र चाहता है कि जमीन खेती बेचकर सभी शहर जा कर रहें पर विमला जानती है कि सांस ससुर पुरखों की जमीन नहीं बेचेंगे अतः माता पिता का मन दुखाकर शहर जाने को तैयार नहीं होती। राजेंद्र की मां भी बेटे की इच्छा देख कहती है तुम्हें जाना हो तो परिवार के साथ जाओ हम बुढ़ापे में गांव नहीं छोड़ेंगे। बेटे की खराब तबीयत के कारण वे उसे गांव में ही रहकर काम करने को कहते हैं पर राजेंद्र नहीं माना और शहर लौट जाता है।

फैक्ट्री की जहरीली हवा और ढंग का भोजन न मिलने के कारण वह फिर बीमार होता है।खबर सुनकर विमला चिंतित

होती है कि किसके भरोसे परिवार को छोड़कर कर जाएं तब सांस कहती है बहू, तू राजेंद्र के पास चली जा। यहां मैं किसी तरह निभा लूंगी। मुझे भी राजेंद्र की बहुत चिंता हो रही है।

यहां परिवार की चिंता और सहयोग की भावना देखी जा सकती है। पति की चिंता में विमला शहर आती है और अस्पताल में उसकी देखभाल करती है। बीमारी लाइलाज होने के कारण डॉक्टर उसे घर ले जाने को कहते हैं। विमला पति को गांव ले आती है। वह गर्भवती होने पर भी सबकी अच्छी देखभाल करती है। विमला के पति को पछतावा होता है कि दोस्तों के कहने पर उसने एक ग़लती की और अपने साथ साथ पूरे परिवार को संकट में डाल दिया। विमला डॉक्टरों व्दारा जवाब देने की बात सांस ससुर को नहीं बताती - जानती थी कि सुनकर वे भी हताश होकर बीमार पड़ जाएंगे।''

"हम अब विमला काकी को एडीयही नहीं कहेंगे, बहादुर काकी कहेंगे।"

उपर्युक्त कथन से विमला की सहनशीलता, संघर्ष और साहस का परिचय मिलता है। परिवार में नारी की भूमिका कितनी महत्वपूर्ण होती है, इसपर भी विस्तृत चर्चा की गई है। पति की मृत्यु के बाद उनको अछूत कह बिरादरी बाहर कर दिया जाता है। विमला को सारा गांव एडियही काकी कहकर चिढ़ाते है पर वह हार नहीं मानती, "राजेंद्र की मृत्यु के बाद विमला ने बहुत धैर्य और बहादुरी के साथ परिवार की जिम्मेदारी उठाई।" विमला के प्रति पूरे गांव की संवेदना और सहानुभूति थी क्योंकि वह अस्पताल में जाकर एड्स के प्रति लोगों को जागरूक करती है।

2. वंश

वंश कहानी के माध्यम से परिवार की ताकत, प्रेम, समझदारी, न्याय और एक दूसरे का सम्मान का चित्रण किया है। कहानी में विशेष रूप से यह दर्शाया गया है कि महिलाओं के प्रति परिवार में संवेदनशीलता और सम्मान के साथ व्यवहार किया जाना चाहिए। इस कहानी के माध्यम से समाज में संतानहीनता जैसे मुद्ध्दों के बावजूद महिला सम्मान और परिवार में न्यायपूर्ण व्यवहार की आवश्यकता को उजागर किया है तथा यह भी स्पष्ट किया है कि परिवार तब मजबूत होता है जब उसमें समझदारी, न्याय और प्रेम का सामंजस्य बना रहे। कहानी की नायिका कल्याणी विवाह के छह वर्ष बाद भी मां नहीं बन सकी। कल्याणी के पति महिपाल पत्नी को बहुत प्यार सम्मान देते है। महिपाल की मौसी बाबा के दर्शन कर संतान प्राप्ति की बात कहती है, पर महिपाल मना करते हुए पत्नी के साथ लिए डाक्टर के पास जाते हैं। वहां पता चलता है कि वह कभी मां नहीं बन सकती। वह दुख निराशा से मौसी के साथ बाबा के पास जाती है जहां बाबा की बातों से बहन की संतान अपनाने की बात उसके दीमाग में आती है। पति के मना करने पर भी किसी तरह पति का विवाह छोटी बहन से कराती है। बहन के दो बच्चे होते हैं, जिनका लाड़ प्यार से अपने बच्चों की तरह पालती है। वह कभी भी बहन को सौत नहीं मानती। एक दिन कल्याणी की तबीयत खराब होती है। कमजोरी के कारण उठ नहीं पाती, पर बहन, बच्चे और नाहि पति उसे आकर देखते हैं। वह आहत होती है। तभी बहन और पड़ोसन का वार्तालाप कानों में पड़ता है कि मौसी है तो क्या वह तो सौतेली। कल्याणी दुखी होकर पडी रहती है, जब पति भी उसकी खबर लेने कमरे में नहीं आता तो वह और भी अपमानित अनुभव करती है "मन रो रहा था।अपने पैरों पर कुल्हाड़ी तुमने खुद ही तो मारी है। जिन बच्चों के लिए इतना किया, वे बड़े हो गए हैं।"

कल्याणी की जीने की इच्छा समाप्त हो गई। बुखार और कमजोरी की हालत में सुबह घर से निकली तो कांपने लगी, पड़ोसन चाची उसे घर ले आई और बेटे को उसकी खबर देने भेजा। कल्याणी बीमार है व पड़ोसन के घर में है सुनकर पति और बहन चिल्ला उठे कि "मेरी बदनामी करवा रही है। गुस्से से कल्याणी पर बरस पड़े कि घरवालों को बताना चाहिए था, हम दुश्मन हैं क्या?'' कल्याणी जो पति के दो शब्द और अपनत्व की चाह लिए थी, पति के गुस्से से और भी टूट गई। तबीयत ज्यादा खराब होने पर अस्पताल में बहन किर्ति और पति आए, और खाना देकर चले गए, घर चलने को नहीं कहा। अस्पताल में भी बहन बच्चे नहीं आए। पति सुबह शाम खानापूर्ति के लिए आकर चले जाते।वह और भी अपमानित महसूस करती है। अभी तक उसे पैसों की आवश्यकता नहीं पड़ी थी, परंतु अब उसे पता चला कि पैसा कितना जरूरी है। उसकी सहेली

सरोज ने उसे अपना अधिकार मांगने और न मिलने पर कोर्ट जाने की सलाह दी। पति के आने पर उसने पूछा कि बहन और बच्चे नहीं आये तो उन्होंने जवाब दिया तुमने हमारी बदनामी करवाई इस कारण वे सब नाराज़ हैं। कल्याणी के दुखी मन से लावा फुटा।

"मैं आपकी पत्नी हूँ। आपको मालूम है? मेरे खाने -पीने में कटौती की जाती है। मेरे साथ नौकरानी सा व्यवहार किया जाता है। मुझे एक-एक पैसे लिए कीर्ति के सामने हाथ पसारना पड़ता है।" वह पति से अपना अधिकार मांगती है, पति को ग़लती का अहसास होता है "कल्याणी का त्याग, समर्पण, सेवाभाव, उदारता सबकुछ उन्होंने कैसे भुला दिया? वह क्यों किर्ति की बातों पर आंख मूंद कर विश्वास करते रहे। आज संतान का सुख कल्याणी के कारण ही उन्हें मिला था।"

पति पश्चाताप करते हुए पत्नी का हाथ थामकर रोने लगता है। कल्याणी भी क्षमा मांगती है। पति वसीयत तैयार कर कल्याणी व किर्ति दोनों को आधे आधे का हिस्सेदार बना देते हैं। यहां पति-पत्नी की समझदारी व आपसी प्रेम, सद्भाव को दिखाया गया है।

3. करमा बुआ

कहानी में करमा बुआ एक ऐसी सुंदर हँसमुख स्त्री है, जो खुद दुःखी होने पर भी दूसरो को आनंद देकर उनकी मदद करती है। इसमें तंत्र मंत्र व अंधविश्वास के कारण कैसे एक परिवार बिखर जाता है इसका चित्रण किया है। करमा हर समय काम में लगी रहती। गाँव के हर व्यक्ति से उनका नाता बहुत अच्छा था। "बाहर से कोई आ जाए तो वह अंदाज नहीं लगा सकता था कि उनके कितने बच्चे हैं? क्यों कि परिवार के ही नहीं, गांव- घर के तमाम बच्चों को वे अपनी मां से बढ़कर प्यारी थीं।"

उसका नाम "कर्मवती'' था लेकिन प्यार से उन्हें सब लोग करमा कहकर पुकारते थे। उनकी शादी एक संपन्न परिवार में हुई थी। पति उन्हें खूब प्यार करते हैं।चार साल तक बच्चे नहीं हुए। सास-ननदें ताने देने लगीं, जिससे वह आहत होती थी। वह सब सहती रही क्योंकि पति के प्यार पर पूरा विश्वास था।वह घर के बच्चों को अपना मानकर भरपूर प्यार देती है। डॉक्टर से जांच कराने पर पता चलता है कि वह ठीक है, पति पिता बनने में अक्षम है। जब उसको यह पता चला कि उनके पति बच्चा देने में असमर्थ है तब वह मां बनने की इच्छा को दबा कर पति को दुखी न होने को कहती। पति के प्रति उसका प्रेम कम नहीं होता। परिवार के भीतर के संघर्षो और कष्टों के बावजूद सहनशीलता, समर्पण और प्रेम की भावना बनाए रखना जीवन का आवश्यक आधार स्तंभ बताया गया है। एक दिन पति घर में एक तांत्रिक बाबा को ले आते हैं। करमा उन्हें देख डर गई। पति ने बाबा की सेवा करने व उनकी बात मानने का दबाव डालता है। "उनके पति इस तरह दीवाने और अंधविश्वासी हो जाएंगे,इसकी उन्होंने कल्पना भी नहीं की थी।" वह तांत्रिक की दुष्टता समझ गयी, बाबा ने रात को पूजा के लिए आने को कहा "पर यह समय अपनी आत्मरक्षा के लिए कुछ निर्णय लेने का था। तब पति की बात मानने के लिए हाँ कहा और वह मौका देख वहां से भागकर अपने मायके पहुंचती है। पिता से कसम लेती है कि वो न कुछ पूछेंगे न वापस जाने कहेंगे। इस प्रकार कहानी में पति का अहम् और निसंतान होने का डर एक परिवार के टूटने का कारण बनता है।

4. 'सुमिरन-बहु'

'सुमिरन बहु' कहानी में यह दिखाया गया है कि समय के साथ जब नई पीढी, आधुनिकता की ओर बढ़ती है पर पारिवारिक मूल्यों से दूर होती जाती है, तब सुमिरन जैसी स्त्रियां ही घर की नींव को मजबूती से थामे रहती है। इस कहानी के माध्यम से यह दर्शाना चाहती है कि भारतीय समाज में स्त्री केवल एक बहु नहीं होती, बल्कि वह पूरे परिवार को जोड़नेवाली शक्ति होती है। सुमिरन बाल विधवा थी। पति की मृत्यु के बाद गाँव का चौधरी उसकी दूसरी शादी के लिए लड़के देखते है, सिमरन के लिए अच्छा सा लड़का मिल सकता है परंतु सुमिरन ने मना कर देती है और रो धो कर ससुराल आ जाती, "लड़की ने आसमान सिर पर उठा लिया कि मुझे मेरी बूढ़ी सास के पास भेज दो--- तब से अपनी अंधी सास की आंखों की

रोशनी बन गई थी वह।"

आज जहां बेटा बहु परिवार के बड़े बुड्ढों की परवाह नहीं करते, वहीं सुमिरन पति के बाद भी उनकों दिया गया वचन निभाती है और जी जान से अंधी सास की सेवा करती है। इतना ही नहीं गलती से छह वषीय बालक बिल्लू के द्वारा मांग भरे जाने पर बिल्लू के परिवार के प्रति अपना कर्तव्य निभाती है। वृद्ध ठकुराइन की खूब सेवा करती है। उनके परिवार वाले और बहुएं भी उतनी सेवा नहीं करते। मरने से पहले ठकुराइन अपनी सारी संपत्ति बच्चों बहुओं में बांट देती हैं और एक पुश्तैनी सोने का हार सुमिरन को यह कहकर देती है कि मुश्किल के समय में सहारा बनेगा, मैं तुम्हारे लिए कुछ नहीं कर पाई। वह उनका आशीर्वाद समझकर हार ले लेती है परंतु ये बात घर की बहुओं को खनकती है। बिल्लू अब जवान हो गया है शहर में पढ़ता है। उसकी शादी हो चुकी है, उसकी बहु उस हार को लेना चाहती है। सुमिरन के घर चोरी होती है चोर हार ले कर भाग जाता है। वह चोर को पहचान जाती है पर किसी से नहीं कहती। अगली सुबह वह मां के घर चली जाती है। सोचती है सास और ठकुराइन दोनों नहीं रहीं तो अब वहां मेरा कौन है।

"उनकी निशानी लेकर जा रही हूँ, बाकी के दिन अपने पिता के यहाँ गुजार दूँगी। अब यहाँ किसके लिए रहूँ?'' इस प्रकार कहानी में सास बहू के रिश्ते व कर्तव्य पालन जो परिवार का आधार है उसका चित्रण किया गया है।

5. पत्थर

डॉ.विद्या बिन्दु सिंह द्वारा लिखित पत्थर कहानी का मुख्य पात्र आशा है। वह अपने माता-पिता की लाडली बेटी है, उसके चार भाई थे, सब की शादी हो चुकी थी। वे सब अपने गृहस्थ जीवन में व्यस्त थे। माता-पिता का ख्याल आशा ही रखती थी। पितजी को रिटायर हुए आठ साल हो गए थे। माता जी का स्वास्थ्य ठीक नहीं था, आशा माता-पिता को लेकर चिंतित थी, अपने माता-पिता के स्वास्थ्य का ठीक न होने के कारण वह अपनी पढ़ाई पूरी न कर पाई।

एक स्कूल में टंकण का काम करने लगी थी। किराए के घर पर रहती थी, मकान मालिक के अनुरोध पर मकान का नवीनीकरण करना था, अतः उसे घर को खाली करने के लिए कहा गया। इसी कारण आशा के पिता ने अपने पुत्रों से नए घर बनाने बातचीत की, लेकिन कोई भी पुत्र जिम्मेदारी लेने को तैयार नहीं था। तब आशा ने पिता से कहा है कि, "हम शहर नहीं, गाँव की जमीन अपना एक छोटा मकान बनवाएँगे, क्योंकि पिता का गाँव पास में ही था।" आशा निर्णय लेती है कि उन्हें अब शादी नहीं करनी है, अपने माता पिता की सेवा के साथ साथ समाज में स्त्रियों के साथ जो अन्याय हो रहा है, उसके लिए उन्हें महत्वपूर्ण कदम उठाना है। जिससे नारियों को न्याय मिल सके। मकान दिन प्रतिदिन बनता ही जा रहा था, आशा की आत्मविश्वास भी बढ़ता जा रहा था। मकान बनने के बाद जब पत्थर रखने की बात आती है तब समाज में जो बातें होगी उसके बारे में सोचकर पिता के नाम पर पत्थर रखने का निर्णय लिया गया है, क्योंकि लोग कहेंगे की बेटी की विवाह किए बिना उसकी कमाई खा रहे हैं। अतः आशा के नाम पर पत्थर न लगाकर पिता के नाम पर पत्थर लगाया गया। मकान बनकर तैयार हो गया। भाई लोग आकर सानंद गृह प्रवेश में सम्मिलित हुए, गृह-प्रवेश संपन्न हुआ।

उपयुक्त कहानी के माध्यम से हमें पता चलता है कि मुश्किलों और पीडा के समय भी परिवार और समाज के बीच दृढ़ सहारा एवं सहनशीलता बनाए रखना जीवन की असली शक्ति है। इस असली शक्ति को आशा पात्र के माध्यम से लेखिका ने स्पष्ट एवं सरल शब्दों में उल्लेख किए हैं।

निष्कर्ष

उपर्युक्त कहानियों को पढ़ने से हमें ज्ञात होता है कि परिवार में नारी की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण है। नारी के बिना समाज एवं परिवार में सफलता हासिल करना संभव नहीं है। कहावत है की 'जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता लोग निवास करते हैं।' भारतीय संस्कृति में नारियों का स्थान हमेशा ऊँचा रहा है और आगे भी रहेगा। नारी धैर्य, लगन, सेवाभाव से परिवार का काम करती है। वह आदर्श नारी, पत्नी, बहू, मां आदि अनेक भूमिकाएं कुशलतापूर्वक निभाती है। कठिन

परिस्थितियों में संघर्ष कर परिवार को इससे बाहर निकालती है, इसलिए नारी की भूमिका परिवार में अत्यंत महत्वपूर्ण है। वह परिवार के सदस्यों को आत्मनिर्भर बनने, शिक्षा और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करने, समाज में योगदान करने के लिए प्रेरित करती है। नारी के बिना परिवार और समाज का विकास अधुरा है। इसलिए हमें नारी की महत्ता को समझना और उनका सम्मान करना हमारा परम कर्तव्य है।

संदर्भ सूची

1. विन्दु सिंह की लोकप्रिय 21 कहानियाँ : कल्पना प्रकाशन, एड़ियही काकी, पृष्ठ संख्या 43-50 (2022)
2. विद्या विंदु सिंह, काशीवास-वंश कहानी प्रथम संस्करण ग्रंथ अकादमी, पृष्ठ संख्या 98- 105(2012)
3. विद्या विंदु सिंह -करमा बुआ, प्रतिभा प्रतिष्ठान, बनदेई पृष्ठ संख्या 89-95(2007)
4. विद्या विंदु सिंह- बनदेई, सुमिरन बहू- पृष्ठ संख्या संख्या- 81-88 (2007)
5. विन्दु सिंह की लोकप्रिया कहानियाँ। पत्थर पृष्ठ संख्या-139-148 (2017)